पत्रकारिता का अर्थ एवं स्वरूप

-डा. अनिल कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद डिग्री कालेज, प्रयागराज
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
9454219856
anilkumarsinghk4@gmail.com

सारांश:

एक-दूसरे की बातों के जानने की बलवती स्पृहा विविध रूप धारण करती है। समाचार पत्र उन सब रूपों में एक है। मनुष्य जैसे-जैसे विकास करता गया, उसी तरह समाचार पत्रों को जानने समझने के नये-नये तरीके अपनाते गए। परिकल्पना के स्परूप जिस समय आने जाने के साधन दुलर्भ थे। जब भौतिक और भैगोलिक बाधाओं से एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश के लिए अगम्य था। उस समय भी साहसी व्यापरियों का समूह अपने-अपने सहयोगियों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान में आया जाया करते थे। इन व्यापारियों का व्यापार के साथ एक और काम था वह एक स्थान के समाचार दूसरे स्थान के लोगों को सुनाना। यकीनन जब छापे खाने की मशीन नहीं थी और न कागज था उस युग में भी मिश्र, फ्रांस भारत की राजनेताओं, आदेशें को पढ़कर छपवाकर वितरित करके जनता तक पहुँचाया था। यूरोप में इन आज्ञा परक पत्रों को गुर्जीरा कहते थे। आगे चल कर यही गजट के नाम से जाना गया।

बीज शब्द: *अन्वेषी, आर्थिक, पत्रकारिता, ग्रामीण, विकास, संसद, बाल, विज्ञान विधि*

आमुख

जीवन की विविधता एवं नये-नये साधनों की बढ़ोत्तरी के कारण पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। आज पत्रकार अपनी अभिरुचियों के अनुसार अपने क्षेत्र का चुनाव करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य समय पूर्णतया विशिष्टीकरण की ओर अग्रसर हैं। इस प्रकार पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों को निम्न तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है

1- अन्वेषी (खोजी) पत्रकारिता
2- आर्थिक पत्रकारिता
3- ग्रामीण पत्रकारिता
4- व्याख्यात्मक पत्रकारिता
5- विकास पत्रकारिता
6- संदर्भ पत्रकारिता
7- संसदीय पत्रकारिता
8- खेल पत्रकारिता
9- बाल पत्रकारिता
10- विज्ञान पत्रकारिता
11- चित्रपट पत्रकारिता
12- वृत्तान्त पत्रकारिता
13- रेडियो पत्रकारिता
14- दूरदर्शन पत्रकारिता
15- फोटो पत्रकारिता
16- सर्वोदय पत्रकारिता
17- विधि पत्रकारिता
18- अन्तरिक्ष पत्रकारिता

आदि पत्रकारिता के विभिन्न-स्वरूप देखने को मिलते हैं। जो हमारे दैनिक जीवन में उपयोग में आते हैं और हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाते हैं।

भूमिका-

आज पत्रकारिता सिर्फ समाचार-पत्र पत्रिकाओं तक सीमित न रहकर संचार के विविध माध्यमों के रूप में यथा दूरदर्शन फिल्म, आकाशवाणी आदि क्षेत्रों में देखने को मिलता है। सिर्फ राष्ट्रीय चेतना जागृति करना मात्र एक काम नहीं है वरन् स्वतन्त्र देश के विभिन्न पहलुओं, विभिन्न योजनाओं एवं देश को खुशहाल करने के लिए किए गये प्रयत्नों तथा लोगों को अपने ओर आकर्षित एवं जोड़ने का काम कर रही है। इसके अतिरिक्त पत्रकारिता का स्वरूप हमें "देश-विदेश के राजनीतिक समीकरणों, आर्थिक नाकाबंदी अथवा साझा बाजार आदि की ओर भी पत्रकारों ने जनता का ध्यान आकर्षित करना प्रारम्भ किया। भारतीय जनता का एक बहुत बड़ वर्ग प्रायः उन सारे निर्माणात्मक प्रयत्नों के प्रति उदासी था, किन्तु पत्रकारिता ने अपने सीमित दायरे से निकल कर विभिन्न क्षेत्रों को अपने में समायोजित कर लिया है।"[1]

शोध आलेख-

वैसे कहें कि आपस के विचारों के आदान-प्रदान करने से ही नवीन मार्ग प्रशस्त होता है तथा जब एक जनमत तैयार और बहस से ही तत्व का ज्ञान होता है। तत्व का ज्ञान होने से ही उनके विषय में नियम बनते हैं। "समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता की संज्ञा दी गयी है। गीता में जगह-जगह पर शुभ दृष्टि का प्रयोग है, यही शुभ दृष्टि पत्रकारिता है जिसमें गुणें को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। गांधी जी तो इसमें समदृष्टि को बल देते थे। समाज हित में सम्यक् प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव और असुन्दर पर सत्यं शिवं सुन्दरम् की शंख ध्वनि ही पत्रकारिता है।"[2] "पर छपे हुए अखबार का रूप पहले जर्मनी में 1609 ई0 में दिखाई देता है। इसके बाद इंग्लैण्ड में 1620 ई0 में समाचार पत्र शुरु हुआ। उसके बाद 1631 ई0 फ्रांस से एक अखबार निकला तभी 1660 ई0 में संयुक्त राज्य अमेरिका से"[3] भी अखबार निकला।

वैसे कुछ विद्वानों ने समाचार पत्र को पारिभाषिक करने की कोशिश किए है। किसी विचारक ने पत्रकारिता को समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका कहा और साथ यह भी साहित्य और इतिहास का निर्माण भी करती है। "समाचार-पत्र का शाब्दिक अर्थ है खबर का चिट्ठा। ऊर्दू शब्द अखबार के माने भी हैं-खबर पहुंचाने वाला, अंग्रेजी शब्द न्यूज पेपर के भी ठीक वही माने जो समाचार-पत्र के लफजी माने होते हैं। कानूनी परिभाषा समाचार पत्र की अंग्रेजी कानून "न्यूजपेपर, लाइबल और रजिस्ट्रेशन एक्ट" के अनुरूप यह है- "जो कोई पत्र (कागज) समय समय पर छपता हो जिसमें आम खबरें समाचार घटनाओं का उल्लेख या किसी बात पर विचार या राय छपी रहा करे और जो छब्बीस दिन के अन्दर छपा करे वह समाचार पत्र है।" वर्तमान सन्दर्भ में यह कहें कि समाचार पत्रों के विविध रूप् हमारे सामने हैं। यह कहे कि प्रत्येक दैनिक, अर्ध-साप्ताहिक, साप्ताहिक, साप्ताहिक पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, चैमासिक, छमाही अथवा सालाना प्रकाशित होने वाले पत्र अथवा पत्रिका जिसमें समाचार विचार और निबन्ध समय पर नियत समय में निकलते रहें वह सब समाचार की श्रेणी में आते हैं। अंग्रेजी में इसे प्रेस शब्द के रूप में जानते समझते हैं। हिन्दी पत्रकारिता का विकास-के आमुख में एन0सी0पंत लिखते हैं -"पत्रकारिता समाज

के विचारों और साहित्य की संवाहिका है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना स्थान प्रतिष्ठित करने के साथ-ही-साथ साहित्य और इतिहास का निर्माण भी करती है। ग्रन्थों में समाहित साहित्य से जो कार्य संभव नही है उस कार्य को पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य ने संभव करने का हमेशा प्रयास किया है। वर्तमान जीवन के बहुआयामी विस्तार और विकास से सुपरिचित होने के लिए पत्रकारिता अपरिहार्य है। पत्रकारिता अतीत को उद्घाटित करने के साथ आज प्रत्येक मनुष्य की सांस और धड़कन को विश्लेशित करती है। विश्व के साहित्य, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, मनोविज्ञान आदि को प्रस्तुत करने तथा खेलकूद, संगीत, नृत्य, फिल्म आदि को लोकप्रिय बनाने में पत्रकारिता का स्थान सर्वोच्च है। पत्रकारिता के विकास का यह युग प्रतियोगिता और प्रतिस्पद्र्धा की भावना से सम्पृक्त पत्र-पत्रिकाओं के व्यावसायीकरण की कथा है। पत्रकार अब भावुकता के साथ व्यावसायिक बुद्धि, व्यापारिक अनुभव एवं व्यावहारिक चातुर्थ से परिपूर्ण होकर एक पूर्णकालिक उद्यमी बन गया है।"[4] पत्रकारिता का अतीत मानव के उस उत्कृष्ट इच्छाओं से जुड़ा है जो उसे अपने बन्धु-बान्धवों के बीच उन्मुक्त भाव से विचार का आदान-प्रदान करने के लिए व्यग्र करती है।

मूल रूप से यह कहें कि पत्रकारिता का सम्बन्ध समाचार-पत्र से है और समाचार का सम्बन्ध पत्र से है। यों सामान्य कार्य में कहें कि पत्र का आशय चिट्ठी से होता है। जिस तरह हम चिट्ठी में घर या आस-पास के समाचार पत्रों का उल्लेख करते है ठीक वैसे ही समाचार पत्रों में देश-विदेश की खबरें छपती हैं उस का फलक बड़ा होता है। वस्तुतः समाचार संकलन प्रकाशन को ही समाचार पत्र कहते हैं- समाचार पत्र का अर्थ स्पश्ट करते हुए लिखते हैं- "अंग्रेजी का न्यूज (NEWS) शब्द भी समाचार पत्र के व्यापकतर क्षेत्र की ओर संकेत करता है। उसके आद्यक्षर 'एन' नार्थ का, 'ई' ईस्ट का, 'डब्ल्यू' वेस्ट का तथा 'एस' अक्षर साउथ का प्रतीक है। 'न्यूज' शब्द का अर्थ उत्तर, पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण दिशाओं की खबरों से है।

बंगला में इसे 'संवाद पत्र' या वात्तविह कहा जाता है। मराठी में इसके लिए 'वृत्त पत्र' शब्द प्रचलित है।

'फारसी' में समाचार को 'खबर' कहते हैं। खबर की जमा (बहुवचन) अखबार है। जिस कागज में बहुत-सी खबरें रहती हैं उसे अखबार कहते हैं।[5] वास्तव में न्यूज का अर्थ ही है-नवीन से नवीनतर खबरें। अतः समाचार पत्र का यह अर्थ हुआ कि नयी से नयी खबर को छापना है। आज का हाल यह है कि सुबह का अखबार दोपहर तक बासी हो जाता है और दोपहर तक कई ऐसे खबर आ जाती है जिसे दोपहर के अखबार में ताजी खबर के रूप में छापती है। प्रो0 राजेन्द्र का मत है कि "साधारण व्यवहार में समाचार वे हैं जो समाचार-पत्र में छपते हैं और समाचार-पत्र वे हैं जिन्हें समाचार-पत्र में काम करने वाले तैयार करते हैं।"[6] श्री प्रेमनारायण चतुर्वेदी के अनुसार-"समाचार गतिशील साहित्य है। समाचार-पत्र समय के करघे पर इतिहास के बेलबूटेदार कपड़े को बनाने वाले तकुए हैं।"[7] डा0 सुशीला जोशी समाचार पत्र की परिभाषा देते हुए लिखती हैं-"समाचार पत्र अतीत के साथ-साथ वर्तमान की सूचना देता हुआ भविष्य की सम्भावना प्रकट करता है। कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एक प्रकार से सूचना देनेवाला 'मौसम पक्षी' होता है।"[8]

ब्रिटेन के शब्दकोश 'मानचेस्टर गार्डियन' समाचार पत्र की परिभाषा इस प्रकार दी गई है:- "समाचार किसी अनोखी या असाधारण घटना की अविलम्ब सूचना को कहते हैं, जिसके बारे में लोग प्रायः पहले कुछ न जानते हों, लेकिन जिसे तुरन्त ही जानने की ज्यादा से ज्यादा रुचि हो।"[9] ब्रिटिश पत्रकार सुविख्यात विलियम के अनुसार समाचार पत्र की परिभाषा इस प्रकार है- "समाचार पत्र और

विविध पत्रिकाएँ चाहे उनका आकार बड़ हो या छोटा हो मूलतः समाचार चिट्ठियाँ होते हैं। इन मुद्रित चिट्ठियों में पाठक को बताया जाता है कि संसार में या उसके किसी भाग के विषय में उसे क्या-क्या बातें जाननी चाहिए या उन व्यक्तियों के सम्बन्ध में जिनकी जानकारी उनके लिए महत्वपूर्ण है; कितना कैसा-कैसा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।"[10]

पत्रकारिता को हम उस अर्थ में ग्रहण कर सकते हैं और अपने जीवन में समाज के विचारों एवं साहित्य, संवाहिका के रूप् में अंगीकार कर सकते हैं। एन0 सी0 पंत ने पत्रकारिता को उस अर्थ में स्पष्ट करते हुए अपनी किताब "हिन्दी पत्रकारिता का विकास" में लिखते हैं-"समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका को पत्रकारिता के रूप में जाना जाता है जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान बना कर उसका निर्माण करती है। ग्रंथों में समाहित साहित्य से जो सम्भव नहीं था वह आज पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य ने साकार कर दिखाया है। स्वतंत्रता से पूर्व के पत्र स्वाधीनता संग्राम के लिए अस्त्र और शस्त्र के रूप में प्रयोग हुए, आंग्ल शासकों का कोपभाजन बनकर भारतीय पत्र-पत्रिकाओं ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की। यंग इण्डिया, हरिजन, आज, स्वदेश, कर्मभूमि, प्रताप, रणभेरी, सेनापति जैसे अनेक पत्रों ने भारतीय जनता को अत्याधिक प्रभावित किया।

और आगे लिखते हैं कि स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता तेजस्विनी, ओजस्विनी, निर्भय, परम न्याय परायण तथा सर्वत्र पुण्य संचारिणी रही है। महर्षि अरविन्द, भूपेन्द्रनाथ दत्त, डा0 एनी बेसेंट, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, चितरंजनदास, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, डा0 राजेन्द्र प्रसाद आदि अनेक नेताओं ने राष्ट्र की सेवा हेतु पत्रों से अपना नाता जोड़ा। महान साहित्य विशेषज्ञ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लाल खड्ग बहादुर मल्ल, अम्बिका प्रसाद व्यास, गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रताप नारायण मिश्र, मुंशी प्रेमचंद, बाबूराव विष्णु पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, लक्ष्मण नारायण, गर्दे, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा कृष्णदत्त पालीवाल ने पत्रकारिता को राष्ट्रीय नव जागरण का साधन स्वीकार किया और मिशन के रूप में इसको त्यागशील संघर्षमयी परम्परा का नियामक माना है।"[11]

यह कहना न होगा कि समाचार-पत्र मानवीय जीवन से सम्बन्धित दिल को रोमांस करना एवं दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को प्रकाशित कर अवगत कराना है। इन घटनाओं को समझने के लिए भावभूमि तैयार करता है तथा लोगों को अपने कर्तेव्य के लिए जागरुक करता है। वह एक स्थान से एक विशेष समय में प्रकाशित होता है और उसकी निर्धारित एक कीमत होती है। जन-मानस को सहज ही सुलभ हो जाता है। समाचार-पत्र को सुरुचि एवं सम्मानपूर्वक बनाने के लिए प्रकाशन के नियम एवं अनुशासन का पालन करना अनिवार्य है। समाचार पत्र का विषय राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, साहित्य, बाल साहित्य, फिल्म, टी0वी0, शिक्षा, मौसम, संगीत, शोक समाचार, शुभ समाचार, व्यापार वाणिज्य तथा कृषि आदि का समावेश होता है।

समाचार पत्रों के विविध प्रकार के छपने वाले पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य के विविध गतिविधियों के संचार से जुड़े सभी साधन और रेडियो और दूरदर्शन को भी इसी के अन्तर्गत गिना जाता है। चैम्बर तथा न्यू बेब्सर्स शब्दकोश के अनुसार, "प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं

प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन नेताओं के समक्ष लोक-कल्याण संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है।"[12]

पत्रकारिता को कला, वृत्ति और जनसेवा के रूप में भी परिभाषित किया गया है। जैसे-जैसे समय परिवर्तन हुआ वैसे ही विचारों का दायरा बढ़ा। पत्रकारिता में भावनात्मक वेगों के साथ-साथ राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास के बहस एवं विचार के क्षेत्र भी शामिल हो गए और पत्रकारिता एक सामाजिक शक्ति को रूप धारण कर लिया। इस प्रकार पत्रकारिता का सरोकार इतिहास से हो गया, राजनीति, समाज, अर्थ व्यवस्था ये सब लोक तंत्र के लिए एक असाधारण हथियार बन गई।

निष्कर्ष -

मानव का नैसर्गिक स्वभाव है कि नित-प्रति नवीन घटनाओं में आपस में बहस करता है और उसके मुद्दों में निष्कर्ष निकालते हैं। उन मुद्दों में बहस के बाद प्रतिक्रियाएँ स्वरूप एक रोचक प्रसंग, मनोरंजक कार्य तथा जोखिम कार्यों में अपना रास्ता ढूँढ लेते हैं। कालांतर से मनुष्य उन रुकावटों और बंधनों को समाप्त करने का प्रयास करता आया है जो विचारों के अबाध आदान-प्रदान में बाधक है।

संदर्भ-

[1] हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप् एवं संदर्भ-विनोद गोदरे पृ0 25 पृ0 सं0 2000 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
[2] हिन्दी पत्रकारिता का विकास-एन0 सी0 पंत पृ0 1, राधा पब्लिकेषन्स दरियागंज, नई दिल्ली
[3] हिन्दी पत्रकारिता इतिहास, स्वरूप् और सम्भावनाएँ-अनिल सिंहा कनिष्क पब्लिषर्स, नई दिल्ली पृ0 58 सन् 2005
[4] हिन्दी पत्रकारिता का विकास-एन0सी0 पंत आमुख से प्रथम संस्करण, 1994 राधा पब्लिकेषन्स अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली 110002
[5] अंबिका प्रसाद बाजपेयी: समाचार पत्र कला, पृ0 33
[6] श्री राजेन्द्र: संवाद और संवाददाता पृ 6
[7] प्रेमनारायण चतुर्वेदी: समाचार संकलन पृ0 16-17
[8] डा0 सुशhला जोशh : हिन्दी पत्रकारिताःविकास और विविध आयाम पृ0 10
[9] मानचेस्टर गार्डियन
[10] पं0 रामचन्द्र तिवारी, पत्रकारिता के विविध आयाम से उद्धृत पृ0 54
[11] हिन्दी पत्रकारिता का विकास-एन0 सी0 पंत पृ0 1 प्रथम सं0 1994 राधा पब्लिकेशन्स दरियागंज, नई दिल्ली
[12] हिन्दी पत्रकारिता का विकास-एन0 सी0 पंत पृ0 2, राधा पब्लिशन्स दरियागंज, नई दिल्ली